Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open Access and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 11, Issue-I, Dec. 2025

# प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और राजनीतिः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
# (Ancient Indian Knowledge Tradition and Politics: An Analytical Study)

**Dr. Prem Kumar Sagar**[a, *]

[a]*Assistant Professor (Political Science), Vrinda Sahay Govt. P.G. College, Dabra, Affiliated Jiwaji University, Gwalior, Madhya Pradesh (India).*

**KEYWORDS**

सनातन, आध्यात्मिक चिंतन, वैदिक युग, सभ्यता और संस्कृति, वेद, पुराण, उपनिषद।

**ABSTRACT**

प्राचीन सनातन भारतीय ज्ञान और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता रहा है। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन तथा विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन करना मात्र नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। नई शिक्षा नीति के प्रस्तावना के अंत में नीति के उद्देश्य के संदर्भ में लिखा है। कि "नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्य तथ ज्ञान, कौशल, मूल्य और सोच में भी होना चाहिए।" जो मानव अधिकारों, स्थाई विकास और जीवन यापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो, ताकि वे सही अर्थों में वैश्विक नागरिक बन सके। इसी तरह छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण तथा सभी स्तरों पर तथा पाठ्यक्रम, शिक्षण अधिगम, परीक्षा मूल्यांकन, शोध आदि में समग्रता की दृष्टि की बात कही गई है। साथ ही भारतीय संवैधानिक एवं नैतिक मूल्य, स्वदेशी स्थानीय भाषा कला, कारीगरी परंपरा के समावेश तथा भारतीय संस्कृति खेल एवं कला के एकीकरण की बात कही गई है।

## परिचय

भारतीय चिंतन में भारतीय संस्कृति और सभ्यता में अद्भुत समन्वयशक्ति सदा से विद्वान रही है। अतः जहां तक एक और इसमें अपनी मौलिक विशेषताओं को बनाए रखा है। वहां दूसरी ओर अन्य सभ्यताओं और संस्कृतियों की अनेक बातों को भी अपने में आत्मसात किया है। चिंतन के क्षेत्र में भी जो संस्कृति का ही एक अंग है। यही बात रही है। समय के प्रभाव के साथ भारतीय सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक चिंतन में यधपि परिवर्तन आए हैं, लेकिन अपनी मौलिक विशेषताओं को खोया नहीं है। इस चिंतन का आधार तो वही गौरवशाली अतीत है। लेकिन वर्तमान की छाप भी उस पर प्रबल है। वस्तुतः कोई भी विचार या चिंतन तभी गतिशील और प्राणवान रह सकता है तथा सामाजिक आवश्यकताओं एवं चुनौतियां को समुचित सामना कर सकता है। जब उसमें समय के साथ चलने और अपने को ढालने की शक्ति होती है। भारतीय चिंतन में यह शक्ति प्रारंभ से ही विद्वान रही है। यहां के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन

* **Corresponding author**
**E-mail:** premkumarsagar999@gmail.com (Dr. Prem Kumar Sagar). https://orcid.org/0009-0007-9255-0841
**DOI:** https://doi.org/10.53724/inspiration/v11n1.05
Received 12th Nov. 2025; Accepted 25th Nov. 2025
Available online 5th Dec. 2025
2455-443X /©2025 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

ने भी परिस्थितियों की अनुकूल अपने को ढाला है। दूसरी ओर आधुनिक वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील विचारों की छाप इसमें स्पष्ट दिखाई देती है।

प्रोफेसर ए. अवस्थी एवं प्रोफेसर राजकुमारी अवस्थी ने इस संबंध में सत्य ही कहा है, ***"कि सामयिक आवश्यकताओं और चुनौतियों का समुचित उत्तर एवं निदान देते खोजते देश का आधुनिक चिंतन विकसित हुआ है।"***

समय के साथ देश को राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में जो चिंतन धाराएं व्यक्त हुई जो नए विचार पनपे और पुराने विचार नए परिवेश में परिपक्व हुए है, उन सभी के व्यवस्थित अध्ययन को हम आधुनिक भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक चिंतन की संज्ञा देते हैं।

इस चिंतन ने अतीत से प्रेरणा ली है और वर्तमान की आवश्यकताओं को ग्रहण किया है। इस प्रकार इसका जो स्वरूप हमारे सामने है। वह अतीत और वर्तमान का सम्मिश्रण है। यही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। उसकी जीवन शक्ति है। प्राचीन भारतीय साहित्य के अध्ययन से विदित होता है। कि भारतीय चिंतकों एवं दार्शनिकों का आध्यात्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में विश्व को महान देंन है। विदेशी विचारक यह आरोप लगाते है, कि भारत के विद्वानों और मनुष्यों ने अलग से अपने विचार राजनीति दृष्टिकोण से प्रस्तुत नहीं किए हैं। लेकिन उनके विचार आध्यात्मिक एवं नैतिक पक्ष को लेकर राजा, राज्य, प्रशासन, सेवा एवं समाजवादी के विषय में विस्तृत जानकारी देते हैं।

भारतीय आध्यात्मिक एवं राजनीतिक दर्शन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। सहस्त्रों शताब्दियों से पूर्व जब विश्व के अन्य देशों में चिंतन का कोई उल्लेख नहीं था। तब भारतीय चिंतन सर्वोच्च शिखर को छू रहा था। भारतीय दर्शन की यह गौरवशाली परंपरा वैदिक युग से लेकर आज तक बनी हुई है। वैदिक युग से हमारे ऋषिमुनि, आचार्य और विचारक राजनीति संबंधी प्रमुख प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करते रहे हैं। हमारा राजनीतिक एवं आध्यात्मिक चिंतन प्रारंभ होकर वर्तमान समय तक चलता आ रहा है। प्राचीन भारत में सबसे प्रथम राजा माने जाने वाले मनु से महात्मा गांधी तक राजनीतिक चिंतन और विचारधारा को एक अविच्छिन्न परंपरा देखने को मिलती है।

**भारतीय चिंतकों एवं दर्शकों की आध्यात्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में विश्व को महान देन–** वैदिक साहित्य के अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है, कि भारतीय चिंतकों एवं दर्शकों की आध्यात्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में विश्व को महान देन है। वेद, पुराण, उपनिषद एवं वैदिक साहित्य इन विचारों के मूल स्रोत माने जाते हैं। चारों वेद ऋग्वेद, सामवेद अथर्ववेद एवं आयुर्वेद जो ईशा से हजारों पूर्व के माने जाते हैं में से ऋग्वेद 10/17310/1, अथर्ववेद 6/8/1 के उल्लेख से यह विद्त होता है। कि उसे समय प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था थी। तथा राजा का चुनाव समिति द्वारा होता था। जो सर्वधारण प्रजाजनो संस्था (विश) द्वारा आयोजित एवं स्वीकृत होती थी। निर्वाचित राजा के लिए समिति की प्रत्येक बैठक में उपस्थित होना आवश्यक होता था। ऋग्वेद9/92/6। ऋग्वेद और अथर्ववेद में राजा, प्रशासन, व्यवस्था, अर्थव्यवस्था एवं शासन तंत्र के विषय में उल्लेख मिलता है। वैदिक साहित्य की अपेक्षा महाभारत और स्मृतियों में प्राचीन आर्य संघों और परवर्ती सामाजिक संगठनों में अंतर और उसके शासन संचालन का स्वरूप अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वैदिक युग के बाद लोग जीवन अपने–अपने वर्ग का स्वतंत्र शासन करने की ओर तीव्र गति से प्राप्त हो रहा था। वैदिक युग में प्रचलित राज शासन की जगह बाद में प्रजातंत्र ने ले ली। मेगस्थनीज पृष्ठ क्रमांक 38–40

,पारिणी ने क्षुद्रक, मालक (अष्टाध्यायी 4/2/25 ), त्रीगर्त 5/3/116, आंध्रा वृषणी 5/3/114, आदि प्रजातंत्र संगठनों का उल्लेख मिलता है। प्राचीन भारत के संघ राज्यों तथा गणराज्यों के संबंध में वैयाकरण पारिणी 500 ई.पू. ने बहुत सी बातें बताई है।

मेगस्थनीज, एरियन, कर्टीयस आदि यूनानी विद्वानों ने भारतीय प्रजातंत्र के बारे में आंखों देखे प्रमाण सहित उदाहरण दिए है। उन्होंने व्यवस्था के दो प्रकार बताएं पहला एकराजत्व शासन प्रणाली तथा दूसरा प्रजातंत्र शासन प्रणाली।

यह स्मरणीय है, कि राजशास्त्र का ज्ञान सर्वप्रथम कौटिल्य को ही नहीं हुआ था। उसके पूर्व शुक्राचार्य, आचार्य मनु, पाराशर, बृहस्पति आदि के विचारों का भी विकास हो चुका था। एवं इन सभी आचार्यों ने अपना ज्ञान वेदों से प्राप्त किया था। दुर्भाग्य वस हमें प्राचीन भारत के राजनीतिक दर्शन का कम साहित्य उपलब्ध है प्राचीन काल के राजनीतिक चिंतन की जानकारी हमें वैदिक साहित्य, रामायण, महाभारत, कामंदकीय, नीतिशास्त्र, शुक्रनीति, बारहस्पत्य (ब्रहस्पति), मनुस्मृति, कौटिल्य के अर्थशास्त्र आदि से प्राप्त होती है।

*"प्राचीन भारत भारत की राजनीतिक विचारधाराओं में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य कौटिल्य की विचारधारा है"*

—सालेतोर के अनुसार

*"प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है। प्रजा के हित में ही उसका हित है। राजा का अपना प्रिय कुछ नहीं है प्रजा का प्रिय की उसका प्रिय है"*

— कौटिल्य के अनुसार

## बृहस्पति और शुक्र नीति

छठी शताब्दी बृहस्पति को राजशास्त्र की एक विशेष विचारधारा का प्रवर्तक माना गया है। शांति पर्व में उल्लेख है। कि ब्रह्मा ने राजशास्त्र पर प्रथम ग्रंथ "पैतामहाशास्त्र" की रचना की जिसमें एक लाख अध्याय थे। भगवान शंकर ने इसे दस हजार अध्यायों में संक्षिप्त किया, जिसे "वैसालाक्ष" कहा गया। इंद्र ने पाँच हजार अध्यायों में उसे संक्षिप्त किया, बृहस्पति ने उसे भी तीन हजार अध्यायों में संक्षिप्त किया जो "बार्हस्पस्त" कहलाता है। इन की तिथि के बारे में विद्वान एकमत नहीं मूल "बार्हस्पस्त अर्थशास्त्र" लुप्त हो चुका है बार्हस्पस्त के संगत उपलब्ध उपकरणों का रचयिता कोई एक व्यक्ति नहीं बृहस्पति कुलगुरु थे। बृहस्पति स्मृति के व्यवहार कांड में राजशास्त्र के अध्ययन के लिए एक विशेष सामग्री प्राप्त होती है। इसमें राजा के कर्तव्य, सेना ,व्यवहार, दुर्ग निर्माण आदि विभिन्न पक्षों का विशद विवरण मिलता है।

## शुक्र नीति

प्राचीन भारतीय राजतंत्र के अध्ययन के लिए शुक्र नीति एक अपरिहार्य ग्रंथ है। इसमें अन्य ग्रंथों की भांति शासन तंत्र का सैद्धांतिक विवेचन नहीं है, किंतु शासन व्यवस्था का विस्तृत विवरण मिलता है। राजा उसके मंत्रियों तथा कर्मचारियों के कर्तव्यों और अधिकारों का अतिरिक्त इसमें समाजशास्त्र और समय नीति का विवरण भी मिलता है। शुक्र नीति से अनेक नई बातें ज्ञात होती हैं। उदाहरणार्थ सामंतों की विभिन्न श्रेणियां और उनकी आय, मंत्रिमंडल के प्रत्येक मंत्री का कार्य क्षेत्र और उसके पद का नाम उनकी दैनिक कार्यों तथा राजा से संबंधो का विवरण मिलता है।

भारतीय राजनीतिक चिंतन का अध्ययन करते समय प्राचीन काल में राजनीति शास्त्र के विभिन्न नाम का उल्लेख मिलता है। प्रथम नाम "राजशास्त्र" महाभारत में बृहस्पति, विशालाक्ष, आदि आचार्य को राजशास्त्र का निर्माण करने वाला राज्यशास्त्र प्रेरेणातारः कहा गया। राजनीति शास्त्र का दूसरा नाम "दंडनीति" महाभारत के शांति पर्व में कहा गया है। कि इस संसार को दंड की व्यवस्था द्वारा ही सत्यपथ पर ले जाया जा सकता है।

यह शास्त्र दंड के चलाने की व्यवस्था करता है। यह दंडनीति कहलाता है। राजनीति शास्त्र का तीसरा नाम "अर्थशास्त्र" कौटिल्य के अनुसार "मनुष्यों को जीविका तथा पृथ्वी को प्राप्त करने तथा सुरक्षित बनाए रखने के उपाय को बताने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र है।" अंतिम शास्त्र "नीतिशास्त्र" इसमें बताए गए उपायों से लोग धर्म मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं। कि प्राचीन भारत में राजनीति शास्त्र एक स्वतंत्र विषय के रूप में भले ही अध्ययन ना होता हो ,परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जाता था।

**शुक्रनीति के अनुसार,** "जिस प्रकार शरीर भोजन के बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार संसार के सब व्यवहार नीतिशास्त्र राजनीतिशास्त्र के बिना नहीं रह सकते है। "

**प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की प्रमुख विशेषताएं**

प्राचीन भारत की संस्कृति की प्राचीनता के संबंध में चाहे जितना विवाद हो, लेकिन यह निर्विवाद है, कि मानव सभ्यता के उच्च स्तर पर वह संस्कृति लता पुष्पित पल्लवित हुई, और उसमें जहां एक और भौतिक अभिवृद्धि तथा आध्यात्मिक चेतना के दर्शन होते हैं। वहीं सामाजिक राजनीति चिंतन में स्थायित्व परिपक्वता कल्याणकारी मार्ग पर चलने का दर्शन भी दिखाई देता है। इसके आधार पर इसमें कुछ विशेषताओं को व्यक्त किया गया।

1. **समन्वय शक्ति**– भारतीय दर्शनमें समन्वय की अद्भुतशक्ति विद्वान है। भारत ने अपने अतीत से प्रेरणा लेकर नवीन विचारधाराओं एवं वैज्ञानिकता को आत्मसात किया है। कई सभ्यताओं से अपने को समन्वय के रूप में प्रस्तुत किया है आज भारत पूरे विश्व में अपनी संपूर्णता को बनाए रखे हुए हैं।
2. **कानून की सर्वोच्चता**– प्राचीन भारतीय दर्शन मेंचाणक्य से लेकर वर्तमान कि भारतीय शासन प्रणाली में हमेशा से कानून की सर्वोच्चता रही है। चाणक्य के द्वारा लिखित ''अर्थशास्त्र'' अपनी पुस्तक में राज्य के सप्तांग सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। और वर्तमान भारतीय कानून व्यवस्था कहीं ना कहीं हमारी प्राचीन परंपराओं से प्रभावित रही है जिसमें मंत्रिपरिषद के सामूहिक निर्णय, दंड की व्यवस्था प्राचीन काल से ही चली आ रही है।
3. मनुष्यों की प्रवृत्ति–प्राचीन भारतीय विचारक मनुष्यों को सैनेका, अगस्टान, हॉब्स के समान स्वाभाविक रूप से स्वार्थी, दुष्ट और दूसरे के अधिकारों का अपहरण करने वाले समझते थे। मनु ने कहा कि निर्दोष एवं शुद्ध आचरण वाला (शुचि) व्यक्ति बड़ी कठिनाई से मिलता है। मनुष्य का स्वभाव अपनी वासनाओ के वशीभूत होता हैं। वह दूसरे के धन और स्त्रियों की चाह रखता हैं। इस प्रकार भारतीय विचारक यह मानते हैं कि मनुष्य में आसुरी प्रवृत्तियाँ प्रबल होती हैं इन्हीं को रोकने के लिए राज्य का जन्म हुआ और जो समाज में स्वशासन और व्यवस्था बनाए रखता है।
4. दंड की शक्ति–प्राचीन भारत में अराजकता को समाप्त करने और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए दंड नीति का निर्माण किया गया, कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के (⅓) भाग में इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि दंड के सही प्रयोग से प्रजा धर्म, अर्थ और काम के पालन में लगी रहती है और समाज में व्यवस्था बनी रहती है।
5. **स्वधर्म का सिद्धांत**– दंडनीति सिद्धांत से ही संबंधित स्वधर्म का सिद्धांत है। प्राचीन राजनीति चिंतन में इस सिद्धांत को विशेष महत्व प्राप्त था। भारतीय विचारधारा के अनुसार मानव समाज को कार्यों के अनुसार चार वर्णों में विभक्त किया गया था। प्रत्येक वर्णन के अपने–अपने कर्तव्य (स्वधर्म) थे अतः स्वधर्म पालन करने से व्यवस्था बनी रहती है।

स्वधर्म का तात्पर्य यह निकलता है, कि भारत एक धर्म तंत्र अथवा धार्मिक राज्य था, गलत है। उस समय राजा धर्म का पालन करता था। किंतु यह धर्म समाज को बनाए रखने वाले मौलिक कानून थे, ना कि किसी विशेष धर्म के मंतव्य और सिद्धांत, राजा किसी विशिष्ट धार्मिक संप्रदाय को प्रोत्साहित न करता हुआ सब मतों को बराबर समझता था।

6. **राजनीतिक व्यवस्था–** वैदिक साहित्य और अन्य प्राचीन ग्रंथो के साहित्य से यह विधित होता है। प्रशासनिक व्यवस्था अवश्य विधमान रही होगी। क्योंकि कि शांति व्यवस्था सुरक्षा और न्याय राज्य के प्रधान उद्देश्य समझ जाते थे। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य का उद्देश्य धर्म सदाचार अर्थ काम की वृद्धि करना बताया गया था।
7. **प्रशासनिक व्यवस्था–** प्रशासनिक व्यवस्था के अभाव में कोई भी देश ना तो विकास कर सकता है, और ना ही विश्व के इतिहास में गौरवशाली स्थान प्राप्त कर सकता है। प्राचीन भारत एक विकसित एवं समृद्धशाली देश रहा है। इससे स्पष्ट होता है, कि प्रशासनिक व्यवस्था विद्वान रही है प्राचीन ग्रंथो में प्रशासनिक व्यवस्था के पर्याप्त उल्लेख मिलता है। उस समय आज के समान सभा, समिति, मंत्री परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था, सैन्य व्यवस्था, न्याय एवं कर व्यवस्था आदि का उल्लेख मिलता है।

## निष्कर्ष

प्राचीन काल की भारतीय ज्ञान परंपराएं और संस्कृति मानव को हमेशा से प्रोत्साहित करती रही हैं। पुराणों में ज्ञान को महत्वपूर्ण बताया गया भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशाला, उज्जैनी, काशी विश्व प्रसिद्ध शोध केंद्र थे। तथा यहाँ कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञान अर्जन करने के लिए आते थे। प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान की गौरव में परंपरा समस्त जगत को आलोकित करती रही है। आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ज्ञान वैभव से जोड़ने का अनिवार्य प्रयास किया जा रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय महर्षियों, संतों एवं मुनियों की प्रज्ञा का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक आध्यात्मिक सामाजिक भौतिक तथा बौद्धिक मूल्य पर केंद्रित होकर विनय, आत्मनिर्भरता, सत्यता, अनुशासित जीवन पर जोर देती है। वेदों में विद्या को मनुष्य की श्रेष्ठ का आधार माना गया है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने घर मंदिर पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा प्रदान की है। समृद्ध शाली सनातनी ज्ञान परंपरा मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करके अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करती है भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांत हर मनुष्य में दैवीय अंशों को उत्कृष्ट तरीके से उजागर करती हैं आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा विद्यार्थियों में सांस्कृतिक साहित्यिक आर्थिक एवं राजनीतिक उत्कृष्ट विचारों का समावेश करके उन्हें उच्चतम कोटि तक पहुंचाया जा सकता है।

## सन्दर्भ सूची

1. डॉ. ए. पी. अवस्थीः "भारतीय राजनीतिक विचारक" लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा पृष्ठ क्रमांक 7–11।
2. ए. अवस्थी एवं राजकुमार अवस्थीः आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतनः रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेज जयपुर, 1974 पृ. 3।
3. हरिदत्तवेदालंकार, "प्रमुख राजनीति विचार" सरस्वती सदन दिल्ली, 1976, पृ. 4।
4. मेगस्थनीज एरियन 12 असावेलीस 5,22,2 एः एनवेजीयन ऑफ इंडिया बाई अलेक्जेंडर द ग्रेट कोर्टियस भाग 9 पृ. 4।
5. बी. सालेतोर, असिएंट इंडियन पॉलीटिकल थॉट एंड इंस्टीट्यूशंस, पृ. 133।
6. ऋग्वेद 10/17310/1।
7. अथर्ववेद 6/8/1।
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

**********